Songs and Poems
for Sabka Desh Hamara Desh

Song 1- ऐ रहबरे-मुल्को-कौम बता

(Below are the lyrics, I'll share the video on whatsapp.)

ऐ रहबरे-मुल्को-कौम बता
आँखें तो उठा नज़रें तो मिला
कुछ हम भी सुने हमको भी बता
ये किसका लहू है कौन मरा...

धरती की सुलगती छाती पर
बेचैन शरारे पूछते हैं
हम लोग जिन्हें अपना न सके
वे खून के धारे पूछते हैं
सड़कों की जुबां चिल्लाती है
सागर के किनारे पूछते है|
ये किसका लहू है कौन मरा...

ऐ अज़्मे-फना देने वालो
पैगामे-वफ़ा देने वालो
अब आग से क्यूँ कतराते हो
मौजों को हवा देने वालो
तूफ़ान से अब क्यूँ डरते हो
शोलों को हवा देने वालो
क्या भूल गए अपना नारा
ये किसका लहू है कौन मरा

हम ठान चुके हैं अब जी में
हर जालिम से टकरायेंगे
तुम समझौते की आस रखो
हम आगे बढ़ते जायेंगे
हम मंजिले-आज़ादी की कसम
हर मंजिल पे दोहराएँगे
ये किसका लहू है कौन मरा...

Song 2- Dastoor by Habib Jalib

https://www.youtube.com/watch?v=UB4BYPeLDdY&feature=youtu.be

lyrics-
दस्तूर[1]

दीप जिसका महल्लात[2] ही में जले
चंद लोगों की ख़ुशियों को लेकर चले
वो जो साए में हर हर मसलहत के पले

ऐसे दस्तूर को सुब्हे बेनूर को

मैं नहीं मानता, मैं नहीं मानता

मैं भी ख़ायफ़ नहीं तख्त-ए-दार[3] से
मैं भी मंसूर हूँ कह दो अग़ियार से
क्यूँ डराते हो जिन्दाँ[4] की दीवार से

जुल्म की बात को, जेहल की रात को
मैं नहीं मानता, मैं नहीं मानता

फूल शाख़ों पे खिलने लगे, तुम कहो
जाम रिंदों को मिलने लगे, तुम कहो
चाक सीनों के सिलने लगे, तुम कहो

इस खुले झूठ को जेहन की लूट को
मैं नहीं मानता, मैं नहीं मानता

तूमने लूटा है सदियों हमारा सुकूँ
अब न हम पर चलेगा तुम्हारा फुसूँ
चारागर मैं तुम्हें किस तरह से कहूँ
तुम नहीं चारागर, कोई माने मगर

मैं नहीं मानता, मैं नहीं मानता

शब्दार्थ

1.

- संविधान
- महलों
- फाँसी का तख़्ता
-

Song 3- Poem of Faiz Ahmed Faiz

https://www.youtube.com/watch?v=6r2qej8Y1z0&feature=youtu.be

Here is a rendition by Rekha Bhardwaj
https://www.youtube.com/watch?v=SFw1P8iDNJQ

lyrics-
इंतिसाब

आज के नाम
और

आज के ग़म के नाम

आज का ग़म कि है ज़िंदगी के भरे गुलिस्ताँ से ख़फ़ा
ज़र्द पत्तों का बन जो मेरा देस है

दर्द की अंजुमन जो मेरा देस है

क्लर्कों की अफ़्सुर्दा जानों के नाम

किर्मख़ुर्दा दिलों और ज़बानों के नाम
पोस्टमैनों के नाम
ताँगेवालों के नाम
रेलवानों के नाम
कारख़ानों के भोले जियालों के नाम

बादशाहे-जहाँ, वालिये-मासेवा नायबुल्लाह फ़िल्अर्ज़ दहक़ाँ के नाम
जिसके ढोरों को ज़ालिम हँका ले गए
जिसकी बेटी को डाकू उठा ले गए
हाथ भर खेत से एक अंगुश्त पटवार ने काट ली
दूसरी मालिए के बहाने से सरकार ने काट ली
जिसकी पग ज़ोर वालों के पाँवों तले
धज्जियाँ हो गई
उन दुखी माँओं के नाम
रात में जिनके बच्चे बिलखते हैं और
नींद की मार खाए हुए बाज़ुओं से सँभलते नहीं
दुख बताते नहीं

मिन्नतों, ज़ारियों से बहलते नहीं
उन हसीनाओं के नाम
जिनकी आँखों के गुल
चिलमनों और दरीचों की बेलों पे बेकार खिलखिल के
मुरझा गए हैं
उन ब्याहताओं के नाम
जिनके बदन
बेमुहब्बत रियाकार सेजों पे सज-सज के उक्ता गए हैं
बेवाओं के नाम
कटड़ियों और गलियों, मोहल्लों के नाम

जिनके नापाक ख़ाशाक से चाँद रातों
को आ आ के करता है अक्सर वज़ू
जिन के सायों में करती है आह-ओ-बुका
आँचलों की हिना
चूड़ियों की खनक
काकुलों की महक
आरज़ूमंद सीनों की अपने पसीने में जलने की बू
तालिब इल्मों के नाम
वो जो अस्हाबे-तब्ल-ओ-अलम
के दरों पर किताब और क़लम

का तक़ाज़ा लिए, हाथ फैलाए
पहुँचे, मगर लौट कर घर न आए
वो मासूम जो भोलपन में
वहाँ अपने नन्हे चराग़ों में लौ की लगन
ले के पहुँचे जहाँ
बट रहे थे, घटा टोप, बे अंत रातों के साए

उन असीरों के नाम
जिनके सीनों में फ़र्दा के शबताब गौहर

जेलख़ानों की शोरीदा रातों की सर सर में

जल-जल के अंजुमनुमा हो गए हैं
आने वाले दिनों के सफ़ीरों के नाम
वो जो ख़ुशबू-ए-गुल की तरह
अपने पैग़ाम पर ख़ुद फ़िदा हो गए हैं

Song 4- Poetry recitation by a young girl

https://www.facebook.com/BuddyBits/videos/1975339265869437/

Song 5- Hubbe Watan by Altaf Hussain Hali (Hali, is a poet from the times of 19th century, here is a short version of his poem on Desh Prem)
https://youtu.be/Kj_-pC5d_Gw

Song 6- Hum dekhenge by Faiz Ahmed Faiz

हम देखेंगे यह नज्म फैज़ अहमद फैज़ की अन्य नज्मो में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखती है और यह नज्म पाकिस्तान में इक़बाल बानो ने अपने पुरे शबाब पर गाई गयी है लीजिए पेश है:

हम देखेंगे
लाजिम है के हम भी देखेंगे
वो दिन के जिसका वादा है
जो लौह-ए-अजल में लिक्खा है
हम देखेंगे...

जब जुल्म-ओ-सितम के कोह-ए-गराँ
रुई की तरह उड़ जायेंगे
हम महकूमो के पाँव-तले
जब धरती धड धड धड़केगी
और अहल-ए-हिकम के सर ऊपर
जब बिजली कड-कड कड़केगी
हम देखेंगे...

जब अर्ज-ए-खुदा के काबे से
सब बुत उठवाए जायेंगे
हम अहल-ए-सफा, मर्दूद-ए-हरम
मसनद पे बिठाये जायेंगे
सब ताज उछाले जायेंगे

सब तख़्त गिराए जायेंगे
हम देखेंगे...

बस नाम रहेगा अल्लाह का
जो गायब भी है हाजिर भी
जो मंजर भी है, नाज़िर भी
उट्ठेगा 'अनल हक़' का नारा
जो मै भी हू और तुम भी हो
और राज करेगी खल्क-ए-खुदा
जो मै भी हू और तुम भी हो

हम देखेंगे... – फैज़ अहमद फैज़
मायने
लोह-ए-अज़ल=सनातन, कोह-ए-गरां=घने पहाड, मरदूद-ए-हरम=इश्वर से वियोग, नाज़िर=देखने वाला

Song 7- Bol ki lab aazad hain tere-

video- https://www.youtube.com/watch?v=ruPC5j05ack

Lyrics-
बोल, कि लब आज़ाद हैं तेरे
बोल, ज़बां अब तक तेरी है
तेरा सुतवां जिस्म है तेरा
बोल, कि जाँ अब तक तेरी है
देख कि आहन-गर की दुकां में
तुन्द हैं शोले, सुर्ख हैं आहन
खुलने लगे कुफ्लों के दहाने
फैला हर इक ज़ंजीर का दामन
बोल, कि थोड़ा वक्त बहुत है
ज़िस्मों ज़ुबां की मौत से पहले
बोल, कि सच ज़िन्दा है अब तक
बोल, जो कुछ कहना है कह ले

Song 8- Chale chalo

https://www.youtube.com/watch?v=Dv4bM2qXcV4

We will send more songs with lyrics, later on.